Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AP–452

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI

Paper - II

(आधुनिक काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **50** शब्द) :

1. (i) 'साकेत' में उर्मिला के विरह वर्णन पर प्रकाश डालिए।

   (ii) 'साकेत' के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

   (iii) 'कामायनी' में 'श्रद्धा' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iv) 'कामायनी' की प्रतीक योजना पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(v) 'असाध्य वीणा' का उद्देश्य समझाइए।

(vi) 'परिवर्तन' कविता के आधार पर पंत के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(vii) रघुवीर सहाय के काव्य पर प्रकाश डालिए।

(viii) 'काल, तुझसे होड़ है मेरी' कविता के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

(ix) 'वाजश्रवा के बहाने' कृति की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(x) वाजश्रवा के चरित्र की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **200** शब्द) :

2. मेरी चिन्ता छोड़ो, मग्न रहो नाथ, आत्मचिन्तन में;
बैठी हूँ मैं फिर भी, अपने इस नृप-निकेतन में।
नयन-नीर पर ही सखी, तू करती थी खेद,
टपक उठा है देख अब, रोम रोम से स्वेद।
ठहर अरी, इस हृदय में लगी विरह की आग,
तालवृन्त से और भी धधक उठेगी जाग।

3. मुझे फूल मत मारो।
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो।
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कन्दर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण धूलि उस रति के सिर पर धारो।
फूल! खिलो आनन्द से तुम पर मेरा तोष;
इस मनसिज पर ही मुझे दोष देख कर रोष।

4. ''ओ चिन्ता की पहली रेखा,
अरी विश्व-वन की प्याली;
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कम्प-सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके,
री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ
जल-माया की चल रेखा!''

5. 'दुख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप
जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल;

6. ''धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका।''
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत-गति, हत चेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।
'यह है उपाय' कह उठे राम जयों मन्द्रित घन
कहती थीं माता मुझे सदा राजीव नयन!

7. कितना आसान है रख लेना अपने पास अपना वोट
क्योंकि प्रतिद्वन्द्वी अयोग्य है
अत्याचारी हत्या किये जाय जब तक कि स्वर्ण धूलि
स्वर्ण शिखर से आकर आत्मा के स्वर्ण खण्ड
किये जाए
गोल शब्दकोष में अमोल बोल तुतलाते
भीमकाय भाषाविद् हाँफते डकारते हँकाते
अंग्रेजी का अवध्य गाय
घण्टा घनघानते पुजारी जयजयकार
सरकार से करार जारी हजार शब्द रोज
कैद

8. कोई कहानी सुखान्त नहीं होती
क्योंकि एक सुखद कहानी का अन्त ही
दुखान्त होता है।
आशय एक ही था
क्योंकि आधार एक ही था।
एक आदर्श जीवन की कल्पना थी दोनों के मन में
और जो कल्पना में होता है
कभी-कभी वह
यथार्थ से भी बड़ा सच बन जाता है।

खण्ड–स प्रत्येक 20

चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **500** शब्द) :

9. मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' (नवम् सर्ग) के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
10. कामायनी के महाकाव्यत्व पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।
11. 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर 'राम' का चरित्र-चित्रण कीजिए।
12. 'वाजश्रवा के बहाने' के काव्य सौष्ठव को स्पष्ट कीजिए।

Roll No : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AP–452

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI

Paper - II

(आधुनिक काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **50** शब्द) :

1. (i) 'साकेत' में उर्मिला के विरह वर्णन पर प्रकाश डालिए।

   (ii) 'साकेत' के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

   (iii) 'कामायनी' में 'श्रद्धा' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(iv) 'कामायनी' की प्रतीक योजना पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(v) 'असाध्य वीणा' का उद्देश्य समझाइए।

(vi) 'परिवर्तन' कविता के आधार पर पंत के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(vii) रघुवीर सहाय के काव्य पर प्रकाश डालिए।

(viii) 'काल, तुझसे होड़ है मेरी' कविता के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

(ix) 'वाजश्रवा के बहाने' कृति की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(x) वाजश्रवा के चरित्र की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

खण्ड–ब प्रत्येक 8

सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **200** शब्द) :

2. मेरी चिन्ता छोड़ो, मग्न रहो नाथ, आत्मचिन्तन में;
बैठी हूँ मैं फिर भी, अपने इस नृप-निकेतन में।
नयन-नीर पर ही सखी, तू करती थी खेद,
टपक उठा है देख अब, रोम रोम से स्वेद।
ठहर अरी, इस हृदय में लगी विरह की आग,
तालवृन्त से और भी धधक उठेगी जाग।

3. मुझे फूल मत मारो।
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नहीं भोगिनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो।
बल हो तो सिन्दूर-बिन्दु यह-यह हरनेत्र निहारो।
रूप-दर्प कन्दर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण धूलि उस रति के सिर पर धारो।
फूल! खिलो आनन्द से तुम पर मेरा तोष;
इस मनसिज पर ही मुझे दोष देख कर रोष।

4. ''ओ चिन्ता की पहली रेखा,
अरी विश्व-वन की प्याली;
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कम्प-सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके,
री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ
जल-माया की चल रेखा!''

5. 'दुख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप
जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल;

6. ''धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका।''
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत-गति, हत चेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।
'यह है उपाय' कह उठे राम जयों मन्द्रित घन
कहती थीं माता मुझे सदा राजीव नयन!

7. कितना आसान है रख लेना अपने पास अपना वोट
क्योंकि प्रतिद्वन्द्वी अयोग्य है
अत्याचारी हत्या किये जाय जब तक कि स्वर्ण धूलि
स्वर्ण शिखर से आकर आत्मा के स्वर्ण खण्ड
किये जाए
गोल शब्दकोष में अमोल बोल तुतलाते
भीमकाय भाषाविद् हाँफते डकारते हँकाते
अंग्रेजी का अवध्य गाय
घण्टा घनघानते पुजारी जयजयकार
सरकार से करार जारी हजार शब्द रोज
कैद

8. कोई कहानी सुखान्त नहीं होती
क्योंकि एक सुखद कहानी का अन्त ही
दुखान्त होता है।
आशय एक ही था
क्योंकि आधार एक ही था।
एक आदर्श जीवन की कल्पना थी दोनों के मन में
और जो कल्पना में होता है
कभी-कभी वह
यथार्थ से भी बड़ा सच बन जाता है।

खण्ड–स प्रत्येक 20

चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **500** शब्द) :

9. मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' (नवम् सर्ग) के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।
10. कामायनी के महाकाव्यत्व पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।
11. 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर 'राम' का चरित्र-चित्रण कीजिए।
12. 'वाजश्रवा के बहाने' के काव्य सौष्ठव को स्पष्ट कीजिए।